आनन्द अनुभूति

आध्यात्मिक प्रबन्ध – मधु गीति

A’nanda Anubhu’ti

A’dhya’tmika Prabandha- Madhu Giiti

Perception of Bliss

Spiritual Management Poetry

गोपाल बघेल ‘मधु’

Gopal Baghel ‘Madhu’

©सर्वाधिकार रचयिता आधीन सुरक्षित : रचयिता से लिखित अनुमति लिये बिना इस पुस्तक को, सम्पूर्ण रुप से या इसके किसी अंश को उसी रूप में अथवा तोड़ मरोड़ कर, जीरोक्स या किसी यान्त्रिक या इलेक्ट्रोनिक विधि से या अन्य किसी पद्धति, रूप या ढंग से, समीक्षकों को छोड़ कर जो संक्षिप्त उद्धरण दे सकते हैं, प्रकाशित न करें और न ही किसी अन्य भाषा में अनुवाद करके या परिवर्तन या परिवर्द्धन करके छापने का प्रयास करें।

रचयिता : गोपाल बघेल ' मधु '

आनन्द अनुभूति, आध्यात्मिक प्रबन्ध– मधु गीति

रचयिता संपर्क: AnandaAnubhuti@gmail.com;
www.GopalBaghelMadhu.com

पुस्तक को थोक भाव में क्रय करने, विचार आदान प्रदान एवं सुझाव देने हेतु रचयिता से सम्पर्क करने के लिये आपका हार्दिक स्वागत है।

हिन्दी, संस्कृत, ब्रज, बङ्गला, गुजराती, पञ्जाबी, उर्दू व अंग्रेजी
रोमन संस्कृत व अंग्रेजी स्वरूप सहित

Photography by Author, Graphic Design: Ms. Shweta Baghel

ISBN: 978-1-9992136-4-0 Spiral Bound
978-1-9992136-2-6 eBook

1. Spirituality. 1. Title.
Printed in 2020 in Canada. eBook 2020

Publishers & Distributors: Gopal Prasad Baghel
President, Akhil Vishva Hindi Samiti, Toronto, On., Canada

Price: C$ 30 Spiral Bound, USD 15 eBook

©All rights reserved by Author. This book may not be reproduced in whole or in part without written permission from author, except by a reviewer who may quote brief passages in a review; nor may any part of this book be reproduced, stored, in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or other, without written permission from the Author.

Author : Gopal Baghel 'Madhu'

A'nanda Anubhu'ti - Perception of Bliss,
Spiritual Management Poetry.

Author Contact: PerceptionOfBliss@gmail.com;
www.GopalBaghelMadhu.com

You are heartily welcome to contact Author for your valuable suggestions, exchange of ideas and bulk purchases of book.

Hindi, Sanskrit, Braj, Bengali, Gujarati, Punjabi, Urdu and English with Roman Sanskrit and English versions.

Photography by Author, Graphic Design: Ms. Shweta Baghel

ISBN: 978-1-9992136-4-0 Spiral Bound
978-1-9992136-2-6 eBook

1. Spirituality. 1. Title
Printed in 2020 in Canada. eBook 2020

Publishers & Distributors: Gopal Prasad Baghel
President, Akhil Vishva Hindi Samiti, Toronto, On., Canada

Price: C$ 30 Spiral Bound, USD 15 eBook

आनन्द अनुभूति

आध्यात्मिक प्रबन्ध – मधु गीति

A'NANDA ANUBHU'TI

A'dhya'tmika Prabandha - Madhu Giiti

PERCEPTION OF BLISS

Spiritual Management Poetry

Gopal Baghel 'Madhu'
गोपाल बघेल ' मधु '

प्रथम भाग : हिन्दी
संस्कृत, ब्रज, बङ्गला, गुजराती,
पञ्जाबी, उर्दू व अंग्रेजी सहित

द्वितीय भाग : रोमन संस्कृत
तृतीय भाग : अंग्रेजी

Part 1 : Hindi
With Sanskrit, Braj, Bengali,
Gujarati, Punjabi, Urdu & English

Part 2 : Roman Sanskrit
Part 3 : English

समर्पण

***

परम ब्रह्म परमात्मा

सभी सम्भूतियों, समस्त **सृष्टि चक्र,** प्रकृति, पञ्चभूत एवं चराचर जगत

आदिपिता व आदिगुरु **सदा शिव**, माँ **पार्वती**,
योगेश्वर श्री श्री **कृष्ण**, प्रेम स्वरूपिणी **राधा जी,**
परम पूज्य सद्गुरु **श्री श्री आनन्दमूर्ति जी**
इत्यादि के चरण कमलों में साष्टाङ्ग प्रणाम

पितृ व मातृ कुल, पितामह स्व. धर्म सिंह जी

(सुपुत्र स्व. सुखराम जी, पौत्र स्व. रामबल जी, प्रपौत्र स्व. खुशाला जी)

पिता स्व. डाल चन्द जी, माँ स्व. जय देवी जी,

नाना जी स्व. **सुख राम मिस्त्री जी**
ताऊजी स्व. **किशनलाल**, ताईजी स्व. **जगनी**,
श्वसुर स्व. **याद राम जी**, सासुमाँ स्व. **सावित्री जी**

प्रेरक स्नेही

सर्व स्व. जगन प्र. गुप्ता, बासुदेव, चरनसिंह,
छिद्दासिंह, मनोहर लाल, मुरारी लाल, इत्यादि।

आध्यात्मिक व साहित्यिक

ऋषि गण, शोधकर्ता, आचार्य, वैज्ञानिक, अभियन्ता, व सद्ग्रन्थ, चतुर्वेद, तन्त्र, श्रीमद्भगवद्गीता, रामचरित मानस, योग वशिष्ठ, महाभारत, रवीन्द्र सङ्गीत, सुभाषित संग्रह, प्रभात सङ्गीत, महर्षि वेदव्यास, पाणिनी मुनि, महर्षि पतञ्जलि, आदि शंकाराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, अहिल्याबाई **होल्कर**, लक्ष्मीबाई,इत्यादि
आदि कवि महर्षि वाल्मीकि, मुशना, गोस्वामी तुलसीदास,
सूरदास, कबीरदास, बिहारी, रहीम, **रसखान**, मीरा बाई, इत्यादि।

आभार

***

परिवार : पत्नी **आशा,** पुत्र **चैतन्य,**
पुत्रियाँ **श्वेता, ऋचा व प्रज्ञा;** धेवता **अरण्य** व पौत्र **रेयाँश**
ग्रही जीव: श्वान **जैट व** स्व. **गूफी,** बिल्ली **माँऊँ**,
गिलहरी **गिल्लू**, पक्षी, वनस्पति, इत्यादि।

समस्त परिवारीय, रिश्तेदार, मूल ग्राम वासी जन
भाई स्व. भीकमसिंह व स्व. सुनहरीलाल, सर्व श्री ओमप्रकाश व हरदेव सिंह
जन्म, वास, प्रवास, दर्शित स्थान, भुक्ति, जिले, प्रदेश, देश, महाद्वीप,
विश्व ब्रह्माण्ड के वर्तमान, भूतकालीन व भविष्य में आने बाले समस्त प्राणी

जीवन सहयात्री, आचार्य गण व अनुरागी:
आचार्य व अध्यापक गण, साधक, ग्रही, सन्यासी, साधना सखा,
सह पाठी, सह कर्मी, सह व्यवसायी, सह यात्री व साक्षी जन

स्व. गनपत राम मिस्त्री, स्व. गोपाल प्र. गौड़
सर्वश्री उदयवीर सिंह रावत, रामजी लाल, प्रमोद बघेल, पंकज बघेल,
देवीदास,बालूलाल, श्रीमती लीलावती, इत्यादि

भूमिका लेखक, अभिमत व्यक्त कर्ता, पत्र लेखक व
संशोधन सुझाने बाले सभी आत्मीय जन, **प्रेरक कवि गण**, गायक एवं लेखक
परिवार, मित्र, परिचित व श्रोता गण, **प्रकाशक, वितरक** व आयोजक

समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, आकाश वाणी, दूरदर्शन
व देश विदेश के सभी विश्व जन, **सभी पाठक**, गायक, श्रोता व मनन करने वाले
सुजन। **आनन्द** लेने व देने वाले एवं **सुझाव** देने वाले सभी सुहृद व सहृद जन।

साधना मन्त्र

पितृ पुरुषेभ्यो नमः । ऋषि देवेभ्यो नमः । ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविःर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा ह्रतम् । बृह्मेण तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिनः ।।

गुरु वन्दना :

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।
गुरुर्बृह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परम बृह्म, तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।
तव द्रव्यं जगत गुरु तुभ्यमेव समर्पये ।

मिलित साधना मन्त्र :

सङ्गच्छध्वं संबदध्वं सं वो मनांसि जानताम्,
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।
समानी व आकुतिः समाना हृदयानि वः,
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधी ।।
मधुनक्तमुतषसो मधुमत्पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान् अस्तु सूर्यः। माध्विर्गावो भवन्तु नः.।।
ॐ मधुः ॐ मधुः ॐ मधुः.

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु न कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्.
ॐ शान्तिः, ॐ शान्तिः, ॐ शान्तिः.
ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
* अथ श्री 'आनन्द अनुभूति' *

अनुक्रमणिका INDEX

(विषय सूची Contents)

प्रथम भाग: हिन्दी PART- 1 HINDI पृष्ठ सं.

प्रथम पृष्ठ, समर्पण, आभार एवं अनुक्रमणिका 1
कविता सं. व मधु–गीति तालिका 9
हिन्दी भाग व अध्याय सूची 11
कवि परिचय व विषय परिचय 12
अभिमत व आपसे भावोन्मुख 18

अध्याय १ से ७ 34-166

ROMAN SAM'SKRTA - Part 2 Page Nos.

Roman Sam'skrta Alphabet 167
Adhya'ya su'cii 168

Adhya'ya 1 -7 169-311

ENGLISH - Part 3 Page Nos.

English introduction with Chapters Index 312
Dedication & Acknowledgement 314
Author Biography and Theme of Book 316
Forewords and Heartily with you 323

Chapters 1 to 7 332- 504

Glossary of spiritual terms used 505
Madhu Giiti & Poem Index मधु–गीति व कविता सं. तालिका 508
प्राक्कथन 510
Prologue 512
Chart of Cosmic Cycle सृष्टि चक्र 514
कवि व पुस्तक परिचय Introduction of poet & book 515

कविता सं. व मधु–गीति तालिका

Poem No. (PN) & Madhu Giiti (MG) Index

कविता सं.– मधु– गीति **PN**-MG	कविता सं.– मधु गीति **PN**-MG	कविता सं.– मधु– गीति **PN**-MG	कविता सं.– मधु– गीति **PN**-MG	कविता सं.– मधु– गीति **PN**-MG	कविता सं.– मधु– गीति **PN**-MG
01- 601	67- 566	100- 322	133- 175	166- 588	199- 031
02- 132	68- 567	101- 320	134- 179	167- 062	200- 038
03- 286	69- 006	102- 150	135- 178	168- 063	201- 557
04- 328	70- 509	103- 118	136- 180	169- 065	202- 646
05- 330	71- 026	104- 119	137- 183	170- 094	203- 647
06 -191	72- 007	105- 127	138- 184	171- 097	204- 752
07- 192	73- 027	106- 651	139- 162	172- 096	205- 136
08- 193	74- 020	107- 126	140- 226	173- 098	206- 091
09- 195	75- 045	108- 002	141- 236	174- 099	207- 440
10- 308	76- 072	109- 003	142- 238	175- 095	208- 554
11- 312	77- 073	110- 120	143- 319	176- 100	209- 508
12- 163	78- 074	111- 004	144- 327	177- 142	210- 510
13- 028	79- 092	112- 005	145- 260	178- 143	211- 168
14- 129	80- 134	113- 017	146- 188	179- 189	212- 468
15- 053	81- 075	114- 159	147- 015	180- 190	213- 461
16- 030	82- 152	115- 018	148- 224	181- 194	214- 167
17- 586	83- 141	116- 140	149- 022	182- 329	215- 463
18- 575	84- 411	117- 025	150- 016	183- 040	216- 464

19- 021	85- 146	118- 055	151- 043	184- 281	217- 658
20- 042	86- 147	119- 037	152- 044	185- 600	218- 465
21- 011	87- 148	120- 128	153- 048	186- 263	219- 466
22- 056	88- 149	121- 046	154- 240	187- 429	220- 467
23- 014	89- 151	122- 047	155- 081	188- 239	221- 471
24- 057	90- 155	123- 054	156- 81A	189- 041	222- 661
25- 013	91- 155	124- 137	157- 082	190- 434	223- 666
26- 061	92- 157	125- 160	158- 82A	191- 645	224- 662
27- 012	93- 158	126- 139	159- 083	192- 656	225- 665
28- 068	94- 185	127- 161	160- 024	193- 668	
29- 069	95- 201	128- 164	161- 144	194- 669	
30- 070	96- 203	129- 153	162- 258	195- 700	
31- 076	97- 186	130- 154	163- 093	196- 701	
32- 077	98- 202	131- 176	164- 563	197- 321	
33- 086	99- 023	132- 182	165- 564	198- 323	

प्रथम भाग – हिन्दी
Part 1 - Hindi

विषय सूची व अध्याय
Contents & Chapters

तालिका	कविता सं.	पृष्ठ सं.
मुख पृष्ठ, समर्पण, आभार एवं साधना मन्त्र		1
अनुक्रमणिका (Index)		8
कवि परिचय व विषय परिचय		12
अभिमत		18
आपसे भावोन्मुख		32
1. आध्यात्मिक प्रबन्ध	01– 62	34
2. आध्यात्मिक प्रबन्ध विज्ञान व शोध	63– 102	75
3. भक्ति व कृपा	103– 128	104
4. करुणानुभूति	129– 146	117
5. कवि अनुभूति	147– 152	127
6. प्राकृतिक	153– 178	132
7. विविध भाषा साहित्य (संस्कृत, ब्रज, बङ्गला, गुजराती, पञ्जाबी, उर्दू व अंग्रेजी)	179– 225	146
प्राक्कथन		510
Prologue		512
Cycle of Creation सृष्टि चक्र		514

Ananda Anubhut

कवि परिचय

मेरे बचपन के सखा, सहपाठी व जीवन-मित्र **गोपाल बघेल 'मधु'** का जन्म भारत में **श्रावण वदी** ४, **सम्वत** २००४ **तद्नुसार** ७ **जुलाई** १९४७ में श्री कृष्ण के लीला स्थल गोवर्द्धन के निकट **रामपुर, अड़ींग**, मथुरा (उत्तर प्रदेश) में ब्रज भूमि में हुआ। राष्ट्रीय योग्यता छात्रव्रत्ति व क्षेत्रीय गायन पुरुष्कार प्राप्त **किए**। राष्ट्रीय तकनीकी संस्थान, दुर्गापुर, प. बङ्गाल से १९७० में यान्त्रिक अभियान्त्रिकी (B. E. Mech.) में विशेष योग्यता लिये स्नातक बने। अखिल भारतीय प्रबन्ध संस्थान, नई दिल्ली, से १९७८ में प्रबन्ध शास्त्र किया।

इंडस्ट्रियल इंजीनीयरिंग, मेटेरियल मेनेजमेंट, आदि में विशेष प्रशिक्षण लिया. पूर्व 'चार्टर्ड इंजीनीयर', इंस्टीव्यूशन ऑफ इंजीनीयर्स, भारत; पूर्व 'सर्वेयर व लॉस असैसर': भारत; पूर्व सदस्य: भारतीय प्रबन्ध संस्थान, दिल्ली उत्पादकता परिषद, भारतीय पल्प व पेपर संस्था (IPPTA), इत्यादि. २००७–२००८ में टोरोन्टो, कनाडा से सिस्टम्स एप्प्लीकेशन प्रोडक्ट– बिजनेस वेयर हाउस (SAP-BW) में व सं. रा. **अमरीका** से ऐप्लीकेशन सीक्यूरिटी में प्रशिक्षण लिया।

व्यावसायिक (१९७०–९७) : भारत के विभिन्न उद्योगों (पेपर, प्रिन्टिन्ग, पैकेजिन्ग, कपड़ा, वनस्पति, ऊन, चीनी, आदि) में अभियन्ता, प्रबन्ध विश्लेषक, उत्पादन योजन व नियन्त्रक, कॉर्पोरेट मेटेरियल मैनेजर, **विकास** प्रबन्धक, महा- प्रबन्धक, प्रबन्ध सलाहकर, मुख्य कार्यभारी, आदि पदों पर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, प. बङ्गाल, पञ्जाब, उत्तराँचल, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली, आदि में उद्योग प्रबन्धन किया। **उन्हें** भारत में उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण व सर्वत्र जाने का अवसर मिला।

व्यावसायिक वर्तमान: १९९७ उपरांत, टोरोन्टो में सपरिवार रहते हुए कागज, इस्पात आदि के क्रय विक्रय, उत्पादन, प्रबन्ध, प्रशासन, आयात निर्यात में प्रायः अमरीका जाते हुए विश्व भर से सम्पर्कित रहे. कनाडा व अमेरिका के अनेक उद्योगों, मार्केटिंग संस्थाओं, टेक्नीकल एसोसिएशन ऑफ पल्प एंड पेपर से संयुक्त रहे. वे 'ग्लोबल फ़ाइबर्स' नामक आयात निर्यात संस्था के अध्यक्ष हैं।

आध्यात्मिक: बचपन से **उन्हें** धार्मिक वातावरण, साधु जनों की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं

आशीर्वाद का सुयोग प्राप्त हुआ. गुरु कृपा से १९६८ में आध्यात्मिक साधना सीखने का सुयोग मिला। १९८४ में उन्हें गुरु दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। १९८४–२००० आध्यात्मिक साधना, सत्सङ्गति, कर्म व सेवा में सम्पृक्त रहा। २००० से एकाकी साधना का सुयोग हुआ। जागतिक, आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक व साहित्यिक सरिता में प्रवृत गुरु, आचार्य, साहित्यकार व कवि जनों के विशेष आशीर्वाद के प्रसाद से उनकी जीवन सरिता प्रवाहित रही।

साहित्यिक : १९८१–८४ में विज्ञान व अध्यात्म पर कुछ लेख व पद्य लिखे। प्रभु कृपा से २००८ से आध्यात्मिक प्रबन्ध, आध्यात्मिक प्रबन्ध विज्ञान शोध, भक्ति कृपा, करुणानुभूति, प्राकृतिक आदि विधाओं में मुख्यतः हिन्दी, ब्रज व बङ्गला में एवं संस्कृत, गुजराती, पञ्जाबी, उर्दू व अंग्रेजी में ७०००+ कविताओं का सृजन अब तक हुआ है जिनमें से २२५ कविताएं रोमन संस्क्रत व अंग्रेजी स्वरूप सहित इस पुस्तक में प्रकाशित हैं। कविताएं गेय हैं और उनके वृत्त चित्र उपलब्ध हैं।

कवियों, मित्रों व जन साधारण ने उनकी कविताओं का खूब आनन्द लिया है। उनकी कविताओं का प्रकाशन कनाडा, सं. रा. अमरीका, भारत व विश्व भर के अनेक समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं संकलन पुस्तकों में हुआ है। कवि सम्मेलनों, साहित्यिक संस्थाओं की कवि गोष्ठियों, अखिल विश्व हिन्दी समिति टोरोंटो व न्यूयार्क, शिक्षा यतन न्यूयार्क, सं. रा. अ., न्यूयॉर्क व टोरोन्टो स्थित भारतीय कौंसलावास व ओटवा में हिन्दी मंच पर व यू–ट्यूव, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर उनकी रचनाऐं गायी गयीं हैं।

वे ओंटारियो के 2011 के एम पी पी चुनाव में टोरोंटो (इटोबिको उत्तर) से प्रत्यासी भी रहे। वे अखिल विश्व हिन्दी समिति, आध्यात्मिक प्रबंध पीठ, व मधु प्रकाशन, टोरोन्टो, ओंटारिओ, कनाडा के संस्थापक निदेशक व अध्यक्ष हैं। वे हिन्दी साहित्य सभा, कनाडा के महासचिव भी हैं एवं देश- विदेश की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं के सक्रिय सदस्य हैं।

उदयवीर सिंह रावत,
पूर्व प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., भारत

विषय परिचय

सृष्टि चक्र व सृष्टि प्रबन्ध : ब्रह्माण्ड मूलतः निर्गुण सत्ता का प्रतिफलन है. निर्गुण ब्रह्म जब लीला भाव में आकर सगुण हो जाते हैं, तब त्रिगुणात्मक प्रकृति प्रकट होती है. त्रिगुणों (सत, रज व तम) में भार व स्थिति साम्य रहने तक साम्य स्थिति बनी रहती है. सन्तुलन असाम्य होने पर प्रकृति सञ्चर उन्मुख हो जाती है और महत अहम् चित्त प्रकट होजाते हैं. चित्त क्रमशः आकाश, वायु, आग्नि, जल एवं पृथ्वी बन उठता है परन्तु उनमें उपरोक्त सञ्चर अवस्थायें भी सूक्ष्म अवस्था में अन्तर्निहित रहती हैं ।

पृथ्वी के जड़ तत्व अतिशय संघर्ष रत होने पर उसमें अन्तर्निहित अव्यक्त चित्त एक कोशी और फिर बहु कोशीय वनस्पति की सृष्टि कर प्रतिसञ्चर उन्मुख, होजाता है. उत्तरोत्तर संघर्ष स्वरूप सृष्टि की प्रतिसञ्चर प्रक्रिया में जन्तु, मनुष्य, बुद्धिजीवी और आध्यात्मिक मानव का अविर्भाव होता है. अन्ततः आध्यात्मिक मानव इस सृष्टि चक्र से विलग हो सगुण में विलीन हो जाता है ।

सृष्टि प्रबन्ध अवस्था व प्रयोजनानुसार सगुण कभी निर्गुण हो जाता है और फिर कभी सगुण. उसका अपना स्वरूप भी उत्तरोत्तर विकसित होता चलता है और वह सृष्टि चक्र का प्रबन्ध सतत नियन्त्रित करता रहता है. इस सृष्टि चक्र की सञ्चर व प्रतिसञ्चर प्रक्रिया में प्रकट सब अवस्थायें सगुण के परोक्ष अपरोक्ष प्रबन्ध में अपना अस्तित्व रखते विलीन उत्थान करते हुए उत्तरोत्तर विकास करती चलती हैं. बृह्म चक्र/ सृष्टि चक्र का चित्र परिशिष्ट में देखें ।

सगुण बृह्म, गुरु, योग, तन्त्र, भक्ति एवम् कृपा : सगुण बृह्म ही सृष्टि में भक्ति और/ अथवा कृपा वश आवश्यक्तानुसार गुरु स्वरूप में प्रकट होते हैं. सृष्टि चक्र सृष्टा की भूमा संस्था है. सृष्ट अवयव उसके आयोजन हैं. देश काल पात्र उसके आयाम हैं. जीवों के भक्ति कर्म ज्ञान का मूल्याङ्कन, निर्देशन व नियन्त्रण होते हुए सृष्टि में उनकी उत्तरोत्तर पदोन्नति व प्रगति होती चलती है. सृष्टि के प्रबन्ध का ज्ञान और अनुभव ही योग है. योग में प्रवीण होने पर, सद्गति आने पर तन्त्र प्रतिष्ठित होता है. ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग व तन्त्र के मूल्याङ्कन में उत्तीर्ण व प्रतिष्ठित होने पर और

भक्ति सुदृढ़ हो जाने पर सृष्टा कृपा कर सकते हैं. जीव का बृह्म की ओर चलने का प्रयास भक्ति है. बृह्म का जीव की ओर चलने का प्रयास कृपा है. सृष्टा का ध्येय है सृष्टि के प्रति अवयव (अणु जीवत्) को विकसित कर सृष्टि प्रबन्ध में प्रवीण कर देना और अन्ततः बृह्म अवस्था में ले आना. बृह्म अवस्था में ही विचरित प्राणी सृष्टि को भली भांति समझ पाता है और समुचित सृष्टि सेवा कर पाता है. सृष्टि में जो प्रबन्धन में बृहत्तम सत्ता हैं वे ही बृह्म हैं ।

आध्यात्मिक प्रबन्ध : सृष्टि नियन्त्रक सृष्टि में क्षुद्र एवम् सूक्ष्म के परस्पर विनियोग विनिमय से सृष्टि में जागतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सृजन और विकास बढ़ाते चलते हैं. क्षुद्रतम को महत्तम बना देना, सृष्टि प्रबन्ध का ध्येय और कौशल है. योगः कर्मसु कौशलम्– कर्म का कौशल योग है. सृष्टा के सृष्टि प्रबन्ध का ज्ञान, विज्ञान, कला, भक्ति व कृपा भरा, योग व तन्त्र युक्त कर्म ही प्रबन्ध कौशल है।

देश काल पात्र : सृष्टि नियन्त्रक, सृष्टि के घटना क्रम का प्रबन्ध, देश काल पात्र को नियन्त्रित कर, करते हैं. यदि किसी सत्ता में देश काल पात्र को नियन्त्रित करने की अवस्था प्राप्त हो जावे तो वह सत्ता विश्व के घटनाक्रम को नियन्त्रित कर सकती है. देश काल पात्र में से किसी एक को भी बदल दें तो शेष दो भी स्वयमेव परिवर्तित हो जावेंगे – घटना व घटना चक्र भी परिवर्तित हो जावेगा. देश व्याप्त है सृष्टि व सृष्ट सत्ताओं की देह में. काल है देश में व्याप्त दूरियों की अनुभूति. पात्र हैं सृष्टि में व्याप्त सत्ताएं ।

सृष्टि में सृजन : सत्ता के, देश काल पात्र से स्वयं को समेट, सृष्टा में समर्पित होने से सृजन हो जाता है. जितना बृहत होगा शून्य, उतना ही बृहत होगा सृजन. नव जीव का सृजन, वैज्ञानिक आविष्कार, राजनैतिक परिवर्तन, प्रकृति की प्रक्रियाएं, संकल्पों का स्वरुपित होना, संस्कारों का उदय, सृष्टि परिवर्तन, आदि सभी कुछ देश काल पात्र की स्वर लहरियों के शून्य से जनित, प्रभावित या प्रतिफलित है ।

आनन्द अनुभूति : सृष्टा, सृष्ट जगत, सृष्टि प्रबन्ध, आध्यात्म एवं स्वयं को समझ लेने पर सृष्टि में रहना व सेवा करना, आनन्दमय होजाता है. साधना व्यक्ति को सृष्टा से जोड़ने की विधि, विज्ञान, कला, अभ्यास व अनुभूति है. गुरु स्वरूप में प्रकट

सगुण बृह्म की सद्कृपा से ही साधना सम्भव हो पाती है । गुरु ही अन्धकार (गु) से प्रकाश (रु) में ले चलते हैं. गुरु ही ज्ञात अज्ञात, प्रतक्ष अप्रतक्ष, हो कर जीव का मार्ग दर्शन करते हैं. गुरु ओत प्रोत भाव से प्रति पल, प्रति स्थान पर, प्रति पात्र के साथ रहते हैं. गुरु ही जीव को अपनी सृष्टि प्रबन्ध विधाओं से उत्तरोतर प्रबन्ध कौशलता में विकसित थिरकित स्पन्दित आनन्दित करते हुए चलते हैं. वे ही जीव को आध्यात्मिक प्रबन्ध के नन्दन विज्ञान में प्रतिष्ठित कर शुभमस्तु कहते हुए अद्भुत आनन्द अनुभूति लेते देते चलते हैं।

सृष्टा के सानिध्य में रहकर जो अनन्त सुख मिलता है वही है "आनन्द ". यह आनन्द वे धरा पर सब को बाँट रहे हैं पर सब जीव सब समय आनन्द अनुभूति नहीं कर पाते. वे चाहते हैं कि उनके सब जीव इस आनन्द को यथाशीघ्र अनुभूत कर लें और उनकी सृष्टि को व स्वयं को आनन्दित करते हुए सृष्टि प्रबन्ध करें. आनन्द स्वयं ही अनुभव किये बिना आनन्दित नहीं कर पाता; अत: सृष्टा चाहते हैं कि हम सब अपने शरीर, मन व आत्मा को सतत परिष्क्रत रखें, साधना द्वारा सृष्टा से सम्पर्कित हो जावें और जगत (ज= य= जो, गत= गतिशील है) को सृष्टा की दृष्टि से देखते, समझते, व्यबहार व प्रबन्धित करते हुए सतत व उत्तरोत्तर विकसित करते चलें. इस अवस्था में जो अनुभव होंगे, वही है 'आनन्द अनुभूति'।

हम सब अपनी आनन्द अनुभूतियों को परस्पर बाँटे तो और अधिक आनन्द अनुभूति होगी और सृष्टा भी आनन्दित होंगे. सृष्टा आनन्दित हों, हम सब पर और कृपा करें और हम सब उनकी सृष्टि की और उत्तम सेवा करे; यही तो है सर्व वाँछित अपेक्षित लक्ष. आनन्द अनन्त हो, "आनन्द अनुभूति" सतत हो समस्त विश्व में तरङ्गित हो. समस्त सृष्टि, सृष्टा, सृष्ट जीव, प्रकृति, पञ्च भूत एवं ब्राह्मी मन, इस ब्राह्मी आनन्द अनुभूति से तरङ्गित, थिरकित एवम् आनन्दित हो जावें यही सृष्टा के अन्तर्मन की अभिलाषा एवं संयोजना है. क्यों न हम उनकी इस एषणा को अपने ऊपर कृपा समझ भक्ति व आनन्द की वर्षा करालें और "आनन्द अनुभूतियों" में डूब जायें एवं सबको डुबा डालें ।

जब हम उनके आनन्द रस को अनुभूत कर रहे होते हैं, वे भी हमारे सर पर हाथ रखे हमारा हृदय सहला रहे होते हैं. हमारी समस्त व्यथा, व्यवधान, बाधाएं एवं ब्याकुलता यथा शीघ्र उनकी प्रकृति हमसे दूर हटा देती है. निकट नजर आती है

भक्ति, कृपा, ज्ञान, कर्म, ऐश्वर्य एवं "आनन्द अनुभूति". सहृदय व सानुराग शाश्वत सृष्टि प्रेम में सरावोर मानव हृदय आनन्द अनुभूति की मधु विधा में मधु विद्या पा गा उठता है उसके सूक्ष्म प्रेम की अनुभुतियां. थिरक उठता है उसके अनादि आनन्द में; विश्व नाच उठता है उसके उर में और वह संगोपन में गा उठता है सृष्टि की सर्वाङ्गी हृदय वीणा पर अनादि अनन्त स्वर भरी 'आनन्द अनुभूति' ।

आनन्द परम पुरुष व जीव के अन्तः मिलन से स्फुरित है. उसका उद्गम सृष्टि की भावधारा में है. जीव का परम शिव से सम्पर्क व मिलन सृष्टि में एक अद्भुत तरङ्ग सृवित करता है. स्वयं परम पुरुष, जीव व सृष्टि इस परम मिलन से तरङ्गित हो जाते हैं. इस भावातीत अवस्था में जो अनुभूतियां होती हैं वे ही हैं 'आनन्द अनुभूति'. आसान नहीं है उनको प्रकट करना, आसान नहीं है बिना अनुभव किये उनका आनन्द ले पाना. परन्तु हर जीव को उनका अहसास है. कभी न कभी सृष्टि चक्र की अपनी यात्रा में उसने इस रस का स्वाद चखा है. कभी न कभी परम पुरुष के अनन्त स्वरूप की अप्रतिम झलक उसे भायी है. वह अन्तर्मन में इच्छुक है इस परम आनन्द को सतत पाने के लिये ।

सृष्टि की अन्तर्मुखी व वहिर्मुखी क्रीड़ाओं की लीला, जाने अनजाने जीव को व्यस्त रखती है, सृष्टि के प्रबन्ध प्रवाह में. उत्तरोत्तर अनन्त मुखी सृष्टि व जीव विकास चिर चरैवति रखना परम पुरुष का कर्म व धर्म है. वे चाहते हैं कि उनके इस सृष्टि प्रबन्धन में प्रति जीव का अधिकतम योगदान हो. वे चाहते हैं देना यह प्रबन्ध आनन्द अधिकतम जीवों को. यह आनन्द ही उन्हें कर्म व धर्म में और प्रतिष्ठित करता है. यही उन्हें और पूर्ण करता है. यही सृष्टि के हर कण हर जीव को उत्तिष्ठ व प्रतिष्ठित करता है. यही सृष्टि के प्रति देश काल पात्र में विकास व आनन्द की गङ्गा बहाता है. 'आनन्द अनुभूति' बहे, बढ़े, थिरके व आनन्द मय रहे यही तो परम पुरुष, सृष्टि व प्रति अणु जीवत की आन्तरिक इच्छा है ।

गोपाल बघेल 'मधु'

अखिल विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क

108- 15 68 Drive, Forest Hills, New York 11375, USA
(संस्थापक अध्यक्ष : स्व. रामेश्वर अशान्त)

अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष	अध्यक्ष
डा. दाऊजी गुप्त	डा. विजय कुमार मेहता

भूमिका

जीवन का अनवरत प्रवाह गङ्गा की निरन्तर बहती धारा है, ठीक इसी प्रकार कविता मनोवेग की सहज अभिव्यक्ति है. इसका प्रस्फुटन स्वाभाविक है और कवि के कर–कमल से कविता–कमल की पंखुड़ियों को आकार प्राप्त होता है. श्री गोपाल बघेल 'मधु' आस्थाओं से आस्तिक एवं उनके दर्शन के अनुसार सृजन का सूत्र एकमेव परम बृह्म परमेश्वर है.

काव्य सृजन में कवि की अपनी अवधारणा एवं अपना व्यक्तित्व महत्वपूर्ण होता है. कवि और लेखक तो साधन–मात्र है, जिसके माध्यम से भाव को आकार प्राप्त होता है.

'श्रीमद् भगवद् गीता' में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा–

"कर्मेण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन,
मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि"

जनकवि गोपाल बघेल 'मधु' ने काव्य–रचना में अर्जुन का रूप ग्रहण किया और श्री कृष्ण ने प्रेरक रूप से उन्हें माध्यम बनाया. जैसे–जैसे निर्देश मिलते रहे, वैसे–वैसे रचना होती रही. चूँकि जनकवि गोपाल 'मधु' सृष्टि की रचना करने वाले प्रभु के अनुयायी हैं, इसलिये उनकी रचनाओं से क्या फलित होगा, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं है. न तो उन्हें कर्म का फल चाहिये और न वह निष्क्रिय होना चाहते हैं, वरन् प्रभु के साथ एकाकार होना चाहते हैं–

"कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू"

जनकवि ने कर्म (रचना) का फल पाने के लिये जन्म नहीं लिया है और न वह कर्महीन होकर बैठना चाहते हैं. वह तो रचना–कर्म पर अपना अधिकार मानते हैं और लेखनी के माध्यम से जो कुछ भी सृजित होता है, उसे प्रभु को समर्पित करते हैं क्योंकि कवि और मनीषी परिभू हैं और स्वयंभू के साथ एकाकार हो जाते हैं.

श्री गोपाल बघेल 'मधु' का रचना – संसार सीमित नहीं, विस्तृत है. उनकी कविताओं को ७ खण्डों में विभाजित किया गया है–
१. आध्यात्मिक प्रबन्ध, २. आध्यात्मिक प्रबन्ध विज्ञान व शोध,
३. भक्ति व कृपा ४. करुणानुभूति ५. कवि अनुभूति, ६. प्राकृतिक,
७. विविध भाषा साहित्य.

जिस कवि का जन्म मथुरा में हुआ वह श्री कृष्ण की अत्मानुभूति के रूप में सामने आया. मीरा ने कहा था– "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई" और ये गिरिधर कौन हैं? वह हैं श्री कृष्ण, जिन्होंने अपनी अंगुलि पर गिरि गोवर्द्धन को धारण कर प्रलयंकारी, मूसलाधार वर्षा से सृष्टि की रक्षा की और इस प्रकार इन्द्र को पराजित किया. गोवर्द्धन गिरि की छाया में जो लोग सुरक्षित रहे, उनको 'आनन्द–अनुभूति' हुई. वही श्री कृष्ण (गोपाल) अपनी छत्रछाया में जनकवि गोपाल 'मधु' की 'आनन्द अनुभूति' के रस को स्वर देते हुए मथुरा ही नहीं वरन् विश्व की धरती को ब्रज बना कविताओं के माध्यम से जनजन को आनन्द की अनुभूति करा रहे हैं.

जब परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वतंत्र 'भारत' का अभ्युदय हुआ, उसी वर्ष सन् १९४७ में गोपाल बघेल ' मधु' का जन्म हुआ. गोपाल स्वयं 'भारत' (अर्जुन) बने गोपाल (श्री कृष्ण) भी बने, एकाकार हुए. श्री कृष्ण ने गायों का पालन किया और गोपाल कहलाये. गोपाल 'मधु' ने कविताओं के रूप में जन्मी गायों का पालन किया, तो गोपाल बनकर उन कविता – रूपी गायों के दूध में 'मधु' घोल दिया, जिसकी मिठास से आनन्द की अनुभूति तो होनी ही है. इसलिये–

" मधु तुम आ जाओ तो रंग भरें जीवन में;
राग भरें, छन्द भरें, गीत भरें त्रिभुवन में.
रूप भरें, रस भर दें, गन्ध भरें हर मन में;

कर्म करें, ध्यान धरें, भक्ति भरें जीवन में. "

जनकवि गोपाल 'मधु' वाचिक परम्परा के कवि बन गये. वह केवल पुस्तक और पाठक के कवि नहीं हैं. जो कुछ लिखते हैं, सीधे कहते हैं, कविता में घुमाव फिराव नहीं लाते. तभी तो जनता के कवि बनकर कहते हैं :

" मानवता शोषित, विचलित है; आतंकित, शंकित, भयमय है.
ताण्डव जग में प्रभु कम कर दो, आनन्दित जन गण मन कर दो."

समय का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कवि प्रश्न करता है–

" समय क्या सृष्टि का आपेक्षिक आयाम है?
समय क्या देश काल पात्र का सहोदर है?
समय क्या सम्भावना की पथ तरङ्ग है? समय क्या अनादि अनन्त की रेखा है?

इन सभी प्रश्नों और जीवन की अनेकानेक समस्याओं का उत्तर हैं जनकवि गोपाल 'मधु' की समय – सापेक्ष कविताएं. उनमें कवि का आवेग और आत्माभिव्यक्ति का प्रवाह काव्य – प्रेमियों को सहज ही प्रभावित करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है.

डा. दाऊजी गुप्त

एम. कॉम., एल. एल. बी., पी. एच. डी. अध्यक्ष : पी. ई. एन., भारत
पूर्व महापौर, एम.एल.सी., पैनल चेयरमैन, उत्तर प्रदेश विधान परिषद, भारत

लखनऊ, भारत

पद्मश्री, डा. श्याम सिंह शशि

पी. एच. डी. (समाज शास्त्र), डी. लिट.(नृविज्ञान एवम् साहित्य),
पी.जी., प्रबन्ध शास्त्र, इंग्लैंड

वरिष्ठ साहित्यकार व नृ–वैज्ञानिक

महा निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्थान,
शिक्षा भवन, रोहिणी, सेक्टर ९, दिल्ली–११००८५, भारत
विजिटिंग प्रोफेसर, इन्दिरा गांधी नेशनल ओपिन यूनीवर्सिटी, नई दिल्ली.
पूर्व महा निदेशक, भारत सरकार– प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण

Safdarjung Encl., New Delhi- 110029, India

स्वस्ति पंथाः

परम सत्ता का प्रतिफलन प्रमुखतः दो स्वरूपों में है– निर्गुण और सगुण. उसके सगुण स्वरूप में सृष्टि के दृश्य जगत का विकास अथवा विवर्त होता है. किंतु वास्तविक नियंत्रक सत्ता मूलतः निर्गुण ही होती है. गुणों के आधार पर उसका सर्वाङ्गीण निवर्चन होना आसान नहीं है. सम्पूर्ण जगत में अन्तर्यामी होते हुए भी वह तात्विक दृष्टि से अतिरेकी और निर्गुण ही रहता है. वह राम–रहीम के दो रूपों में प्रतिष्ठित होते हुए भी एक ओंकार अथवा एकेश्वर्वाद की आस्था में रूहानी रोशनी पाता है. इसी एक मात्र सत्य को संतों की वाणी मनसा–वाचा–कर्मणा जीती जनाती रही है. कबीर, दादू, रैदास, मलूकदास और बाबा फ़रीद आदि संत–कवि गुरु नानक को भी भाये थे. फलतः वे गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान पा गये. हिन्दी संत साहित्य में सूर, तुलसी तथा सगुण सन्त कवियों पर जितना लिखा गया उतना निर्गुण विचार धारा के संतों पर नहीं. कबीर अपवाद हैं, जिनकी वाणी को डा. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने पूरी तरह पहचाना और कबीर वाणी का विशद मूल्याङ्कन किया. सूफ़ी मत अल्लाह तथा राम का समकेतिक स्वरूप है अतः हिन्दू मुसलमान दोनों वर्गों ने उसे अपनाया.

कनाडा वासी भारतीय मूल के रचनाकार गोपाल बघेल 'मधु' की आध्यात्मिक

रचनाओं का आनन्द लेते हुए ऐसा लगा कि जहाँ सार्वभौमिक भारतीय संस्कृति कभी कभी, कहीं कहीं भारत में पराई हो रही प्रतीत होती है, वहीं कुछेक भारतीय मूल के कलमगार वसुधा पर अन्यत्र जाकर उसे अपनी आत्मा में न केवल समाये, विकसित व प्रकटित किये हुए हैं वरन उसे विश्व भर में प्रस्फुट, पल्लवित और तरङ्गित कर रहे हैं.

मैंने यूरोप, यू. एस. ए., कनाडा, दक्षिण अमेरिका, मारीशस, सुरिनाम, गुवाना, फिजी, ट्रिनीडाड सहित अपनी विश्व यात्राओं में भारतवंशियों व अन्य प्रवाशियों के सुख दुख व आनन्द अनुभूतियों को निकट से अनुभव किया है एवम् उनकी साहित्यिक कृतियां को देखा व सुना है. मुझे उनका वह सुर कभी उस भारतवंशी रोमा समुदाय के शोक भींगे आनन्द संगीत में सुनाई पड़ा जिसके पूर्वज एक हजार वर्ष पूर्व भारत छोड़कर मिश्र तथा अन्य देशों की ओर चल पड़े थे. उनके वंशज आज भी भारत को 'बारोथान' कहते हुए नहीं अघाते हैं. उनकी मात्रभाषा रोमानी है जिसका साहित्य मानवीय संघर्ष का दर्दीला दस्तावेज़ है. 'होलोकास्ट' की यातना झेलने के बाद भी उनका 'पैगानिज्म' जीवित रहा जो कहीं ऋग्वेद की प्रकृति पूजा से जुड़ा तो कहीं ईसाई, मुस्लिम तथा अन्य मत मतान्तरों में पल्लवित हुआ. वह 'वसुधैव कुटुम्बकम' के शान्ति सन्देश में अपना अस्तित्व बनाये हुए है. रोमा यद्यपि पश्चिमी संस्कृति में पूरी तरह घुलमिल गये हैं फिर भी उनकी रोमानी भाषा में अनेक शब्द हिन्दी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, मारवाड़ी आदि के आज भी सुनने को मिलते हैं.

विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क व लंदन, गीतांजली विर्मिंघम, आदि के आमन्त्रण पर आयोजित वर्ष २००३ की मेरी साहित्यिक यात्राओं में भी मैंने भरतवंशियों को भारतीय संस्कारों, भारतीय जन मानस व अपनों के आत्मीय प्रेम की याद में आतुर एवं सरावोर पाया. वे अपनी आत्मा में भूमा की भाषा लिये, नये परिवेश में अपने को ढालते संवारते हुए, उत्तरोत्तर अपनी जीवन आत्मा को विकशित, संशोधित करते हुए व विश्व मानव संस्कृति से समायोजन करते हुए, उसे कुछ भारतीय व भूमा स्वर और सुर देते हुए, आगे बढने का सतत प्रयास करते रहे हैं. प्रवासियों के भूमा मानस की टीस बार–बार उनकी लेखनी से निसृत होकर विश्व व्यापी ब्यथा, व्यवस्था, विविधता व अनुभवों को 'आनन्द अनुभूति' बना देती है. कोई रचनाकार छायाबादी शब्दावली से बंधा लगता है तो कोई प्रगतिवाद से जुड़ा हुआ.

जिसे जो भी भाता है, उसके सृजन का अङ्ग बन जाता है. अपने संस्कारों को तुकान्त अतुकान्त छन्दों में ढालते हुए वे अभिनव साहित्य सृजन करते चलते हैं.

मथुरा (उ. प्र.) में जन्मे, दुर्गापुर (प. बङ्गाल) व नई दिल्ली में पढ़े, भारत में पले, फले फूले, कनाडा के कवि गोपाल बघेल 'मधु' की रचनाओं में उनके धार्मिक व अध्यात्मिक संस्कारों, अनुभवों एवं अनुभूतियों को रसात्मक आनन्द प्रवाह मिला है. उन्होंने इसके लिये तत्सम शब्दावली का प्रश्रय लिया है. अपनी कविताओं में वे अपनी अटूट भारतीय संस्कृति व संस्कारों को भूमा भाव की आकाश गङ्गा में उतराते, डुबाते व रसमय करते या तरङ्गित व झंकृत करते प्रतीत होते हैं. उनका यह गेयाँश उनके सृजन का साराँश प्रतीत होता है:

" आनन्द उमङ्गों में भरकर, मैं तुमरा गीत सुना जाऊँ;
मैं तारक बृह्म लिये मन में, तरता जाऊँ, वरता जाऊँ."

'मधु' की लेखनी को स्नेहाशीष देते हुए, मैं आशा करता हूँ कि आध्यात्मिक कविता प्रवाह के साथ साथ, यदि वे विशुद्ध साहित्य सृजन की भाव विधा में काव्य या गद्य रचना करें तो उसमें भी निश्चय ही उनकी लेखनी भारतीय संस्कृति के संरक्षण–परिरक्षण में और अधिक सहायक सिद्ध होगी. स्वाभाविक रूप से उनकी लेखनी अपना पथ स्वयं पावेगी और अगले संकलनों में और भी अधिक ऊर्जा, अनुभूति, आनन्द व प्रभु कृपा के साथ प्रष्फुटित हो वैचारिक और आध्यात्मिक प्रबन्ध की क्रांति का पथ प्रशस्त करेगी. स्वस्ति पन्थाः

डॉ. श्याम सिंह शशि

रचियता – ४००+ पुस्तकें– हिन्दी, अंग्रेजी, आदि भाषाओं में:
सामाजिक विज्ञान हिन्दी शब्दकोश, महाकाव्य अग्निसार, शिलानगर में, आदि

डॉ. हरिसिंह पाल

महा-सचिव, नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली, भारत

कवि, व्यंगकार, समीक्षक, वाल साहित्यकार व लोक साहित्य समीक्षक

पी. एचडी (लोक साहित्य), एम.एड., पी.जी.डी. (दूरस्थ शिक्षा)

एम. ए. (हिन्दी), एम.ए. (समाज शास्त्र), बी. एस. सी, बी. एड, सी. लिब, एस.सी.

पूर्व भारतीय प्रसारण सेवा अधिकारी, नई दिल्ली, भारत

काव्य समीक्षा

भारतीय जीवन दर्शन में धर्म और अध्यात्म, आचरण और मानवीय चिन्तन के रूप में स्वीकृत रहे हैं। प्रकृति और ईश्वरीय सत्ता की विवेचना विद्वान लोग अपने अपने तरीके से करते रहे हैं। एक संवेदनशील रचनाकार कवि अपनी भावनात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अपनी रचना में सहज ही कर लेता है। श्री गोपाल बघेल 'मधु' ऐसे ही सहृदय सफल एवं सशक्त रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों का प्रष्फुटन 'आनन्द अनुभूति' नामक काव्य संकलन में किया है. बहुभाषी कविताओं का यह अनूठा काव्य संकलन पाठकों को एक अलग ही भाव भूमि में ले जाता है।

कनाडा वासी कवि गोपाल बघेल 'मधु' मूलतः भारतीय हैं, ब्रजवासी हैं। आनन्द और उल्लास प्रत्येक कण कण में व्याप्त है, इसकी प्रतीति इस काव्य संग्रह में सहज ही की जा सकती है। 'मधु' जी की कविताओं की विशेषता यह है कि ये एक गीतात्मक शैली में लिखी हुई हैं इसलिये इन्हें गुनगुनाकर गाया जा सकता है और तब इनका आनन्द अलग ही आता है। मुझे इन कविताओं को पढ़ने का सुयोग मिला. प्रारम्भ में फोन पर इन नवजात गीतों को 'मधु' जी से सुनने का सुअवसर मिला। बाद में कवि सम्मेलनों में सुनकर और आनन्द मिला। इनकी आनन्द अनुभूति ने मुझे भाव विभोर कर दिया है। आशा है कि

पाठक इन गीतों को इसी भाव स्वरूप में स्वीकार कर आनन्द मग्न हो सकेंगे।

श्री गोपाल बघेल 'मधु' ने अभियान्त्रिकी व प्रबन्ध शास्त्र की कर्म भूमि से उत्तिष्ठ हो साहित्य में जो अजस्र आध्यात्मिक काव्य सरिता बहाई है वह अद्वितीय है। उन्होने अल्प काल में उत्तरी अमरीका, यूरोप, भारत व विश्व भर के हिन्दी साहित्य जगत में सबका मन मोह लिया है। उन्होने अब तक ७००० से अधिक कवितायें व लेख हिन्दी, ब्रज, बंगाली, उर्दू, अंग्रेजी, इत्यादि में लिख कर सराहनीय कीर्तिमान स्थापित किया है।

इस पुस्तक में प्रस्तुत २२५ कवितायें अपने रोमन संस्कृत व अंग्रेजी स्वरूप सहित प्रकाशित हैं। हिन्दी की देवनागरी लिपि को अच्छी प्रकार न जानने वाले भारत, नेपाल, बङ्गलादेश, पाकिस्तान, फ़िज़ी, गयाना, मौरीशिस, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, टोबागो, दक्षिणी अफ़्रीका, यमन, युगांडा, अमरीका, कनाडा, यू. के., जर्मनी, न्यूजीलेंड, सिंगापुर, मलेशिया, यू. ए. ई., इत्यादि में बसे आध्यात्मिक व हिन्दी कविता प्रेमियों के लिये यह प्रयास अभिनव अमृत वर्षा तुल्य है।

सुकवि 'मधु' जी की काव्य शैली अपनी है और शब्दावली व प्रस्तुति भी उनकी अपनी निजी है। उन्होंने इन्हें किसी से उधार नहीं लिया है और न किसी की नकल करने का प्रयास किया है। इसीलिये कथ्य में और शैली तथा प्रस्तुतीकरण में अभिनवता विद्यमान है। इस सफल एवं सार्थक काव्य प्रणयन के लिये 'मधु' जी को विशेष वधाई और आशा है कि उनकी इस कृति का हिन्दी व अन्य सभी भाषाओं के साहित्य संसार में भरपूर स्वागत होगा।

डॉ. हरी सिंह पाल

इन्द्रा पार्क, नई दिल्ली– ११००४५

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद बघेल

एम. एस. सी., एम. ए., पी. एच. डी., पीजीडी पत्रकारिता
वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत

सेवानिवृत उपमहाप्रबन्धक, दूरसंचार (एम. टी. एन. एल.), मुम्बई

प्रस्तावना

श्री गोपाल बघेल 'मधु' की काव्य–कृति 'आनन्द अनुभूति – आध्यात्मिक प्रबन्ध' की कवितायें पढ़ीं. मेरे बचपन के प्रेरक गोपाल जी एक उत्कृष्ट कोटि के कवि भी हैं, यह उनकी कविताओं की मन्दाकिनी में डुबकी लगाने पर ही जाना. उनका जन्म श्री कृष्ण की लीलास्थली ब्रज वसुन्धरा के पावन क्षेत्र गोवर्द्धन की तलहटी में रामपुर में किसान परिवार में हुआ. आपके जन्म के लगभग छह माह में ही आपके पिताश्री पञ्च तत्व का शरीर त्याग परलोक चले गये. लालन पालन आपकी देवी तुल्य माँ ने भरपूर वात्सल्य से किया. धार्मिक स्वभाव के सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित पितामह आपके प्रेरक व संरक्षक रहे.

आपकी प्रतिभा ने बचपन में ही अपनी पहचान दिखानी शुरू कर दी थी. उस जमाने में जब पढ़ने लिखने का माहौल भी नहीं था, आपने अत्यन्त मेधावी छात्र के रूप में क्षाति प्राप्त की. समुचित जानकारी व पर्याप्त मार्ग दर्शन के अभाव के बावजूद आपने आई. आई. टी., कानपुर द्वारा हुए चयन में एन. आई. टी., दुर्गापुर (पश्चिम बङ्गाल) में यान्त्रिक अभियान्त्रिकी में प्रवेश लिया और विशेष योग्यता लिये यान्त्रिक अभियन्ता बने. जिन्दगी के आपके अनुभव हर सामान्य व्यक्ति से नितान्त अलग और विशिष्ट रहे हैं. जिन्दगी के अनेक खट्टे मीठे अनुभवों से गुजरते हुये आप कनाडा में जा कर बस गये. इस तरह भारत से लेकर विश्व भर को आपने कवि की दृष्टि से अनुभव किया है; जिसका प्रतिफलन आपकी कविताओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है.

आप कर्म से अभियन्ता, प्रबन्धक व बिजनैस ऐक्जीक्यूटिव हैं तथा व्यवहार से आध्यात्मिक सद्पुरुष हैं. इसीलिये आपकी कविताओं में विज्ञान और अध्यात्म का

अद्भुत सामंजस्य दिखायी पड़ता है. आपने अध्यात्म को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हुये उसके रूपों को कहीं परिभाषित किया है तो कहीं उसका ईमानदार अनुसन्धान करने का प्रयास किया है.

आपके इस प्रयास का परिणाम यह हुआ है कि आपकी कविता एक ऐसे काव्य गुण से समृद्ध हो गयी है जिसकी किसी पारम्परिक काव्य गुण से तुलना नहीं की जा सकती. वैज्ञानिक दृष्टि संपृक्त तथा अध्यात्म रस से सराबोर इन कविताओं में ऐसी आनन्द की छटा बिखरी हुयी है जो इन कविताओं को समकालीन काव्य से पूरी तरह अलग इसे ऊँचे पायेदानों पर स्थापित कर देती है.

आपकी कविताओं में जिन्दगी के ऐसे विरल पहलुओं की झलक देखी जा सकती है जो अन्य किसी कवि की कविताओं में देखने को नहीं मिलेगी. आपकी भाषा सरल और प्रवाहमय है. आपने खड़ी बोली और ब्रज भाषा से शब्द–सम्पदा प्राप्त की है इसलिये आपके काव्य में मधुरता का प्राचुर्य है. इसमें आपके व्यक्तित्व पर बंगाली संस्कृति के प्रभाव को भी देखा जा सकता है. आपकी काव्य भाषा शुद्ध और तत्सम शब्दावली युक्त है. सभी कवितायें गेय तत्व से भरी हुयी हैं जिन्हें साज बाज के साथ गाय जा सकता है.

शिल्प की दृष्टि से मधु जी की कवितायें गीत छन्द के प्राय: सभी मानदंडों को पूरा करती हैं. आपकी काव्य शैली पाठक के मन पर प्रभाव छोड़ती है. अलङ्कारों के मोह में आप नहीं पड़े हैं फ़िर भी आपकी कवितायें काव्यत्व की हर कसौटी पर खरी उतरती हें. विषय वस्तु की द्रष्टि से आपकी कवितायें गम्भीर और विचार प्रधान हैं. इनमें उच्च स्तरीय दर्शन और अध्यात्म की सर्वत्र व्याप्ति देखी जा सकती है. भक्ति, विज्ञान, जिज्ञासा, अनुसन्धान और सत्य के प्रति असीम आसक्ति के सम्यक संयोग ने इन कविताओं को असीम ऊँचाई प्रदान कर दी हैं. गोपाल जी की कविता आज के भौतिकवादी युग में भटके हुये मन को विशाल वट वृक्ष की छाया के समान शान्ति और शीतलता प्रदान करने वाली हैं.

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद बघेल

प्रोफ़ेसर देवेन्द्र मिश्र

एम. ए., पीएच. डी.

वरिष्ट साहित्यकार

कनाडा के गवर्नर जनरल द्वारा
'सोवरीन मैडल फ़ॉर वोलंटीयर्स' से सम्मानित

मारखम, टोरोंटो, ओन्टारियो, कनाडा
devendramishra1963@gmail.com

शुभाशीष

मैं व्यक्तिगत रूप से श्री गोपाल बघेल 'मधु' जी को पिछले २० वर्षों से जानता हूँ । उनकी हिन्दी के प्रचार और प्रसार में की गई सेवाएँ उत्कृष्ट व अनुकरणीय हैं और वे सभी हिन्दी प्रेमियों को प्रोत्साहित करती हैं ।

वे तन-मन-धन से भारत की संस्कृति के स्तम्भ हैं और हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए सदैव तत्पर हैं । एक कवि के रूप में श्री बघेल जी को देश विदेशों में उनकी रचनाओं के लिए विशेष सम्मान प्रदान किया गया है ।

'अखिल विश्व हिन्दी समिति, कनाडा' के अध्यक्ष के रूप में गोपाल जी पिछले १० वर्षों से लगातार प्रति वर्ष भव्य 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' आयोजित करते आ रहे हैं जिसमें भारत, अमरीका व कनाडा के जाने माने साहित्यकार भाग लेते हैं ।

'हिन्दी साहित्य सभा, कनाडा' के महा- सचिव के रूप में भी उनकी सेवाएँ सम्मान योग्य हैं । भारतीय कोंसलावाल, टोरोंटो में भी वे 'हिन्दी दिवस' को होने वाले 'कवि सम्मेलन' का आयोजन व संचालन करते हैं ।

मूल रूप से बघेल जी की कविताएँ हृदय स्पर्शी, संदेश वाहक और हृदय को ओत- प्रोत करने वाली हैं । उनकी रचनाओं में हिन्दी साहित्य के विभिन्न रूप दृष्टि-गोचर होते हैं जिनमें कहीं छायावाद तो कहीं रहस्यवाद और आध्यात्मवाद तो प्रायः भरपूर देखने को मिलता ही है ।

उनकी रचनाएँ निस्सन्देह आपको एक ऐसे तार से जोड़ देती हैं जिसका अन्दाज़ आत्मा और परमात्मा के मिलन का अद्भुत संयोग है ।

उनकी असंख्य कविताओं की अनेक पुस्तकें हैं तथा 'आनन्द अनुभूति' उनमें वास्तव में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है ।

डॉ. देवेन्द्र मिश्र

श्याम त्रिपाठी

वरिष्ठ साहित्यकार व सम्पादक

प्रमुख सम्पादक, हिन्दी चेतना

अध्यक्ष, हिन्दी प्रचारिणी सभा, कनाडा

मारखम, टोरोंटो, ओंटारियो, कनाडा
ShiamTripathi@gmail.com

अभिमत

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं कवि गोपाल बघेल 'मधु' जी के विषय में कुछ शब्द लिखूँ | गोपाल जी को मैं लगभग २० वर्षों से जानता हूँ | आप एक मँजे हुए साहित्यकार और सहृदय काव्य प्रेमी हैं | आप 'अखिल विश्व हिन्दी समित' कैनेडा के अध्यक्ष हैं और साथ में 'हिन्दी साहित्य सभा' कैनेडा के महा-सचिव हैं | आप हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के लिए तन-मन-धन से कार्य करते रहते हैं |

विशेषकर हिन्दी भाषा के प्रति आपका समर्पण सराहनीय है | बघेल जी टोरंटो के सुप्रसिद्ध कवियों में अपना स्थान रखते है और हिन्दी मंच के जाने -माने कवि हैं | मंच पर अपनी कविताओं से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर देते हैं | आपकी वाणी बड़ी सरस और मधुमयी है | आपकी कविताएँ भावपूर्ण एवं काव्य के नियमों पर आधारित हैं | रचनाओं को पढकर भक्ति काव्य के कवियों की स्मृति सुगंध मिलती है |

आपकी शैली में आपके व्यक्तित्व की छाप है | जो भी लिखते हैं हृदय से लिखते हैं, जिससे सब आनन्दित होते हैं व मंच पर अपनी मौलिक रचनाएँ सस्वर सुनाकर श्री बघेल जी श्रोताओं को भाव विभोर कर देते हैं | आपकी रचनाओं में आध्यात्मिकता पदे पदे दृष्टिगोचर होती है । आपकी काव्य कला अन्तःकरण को कुछ ऐसे संस्पर्श करती है कि मन मयूर मग्न हो नाच उठता है । आपकी 'आनन्द अनुभूति' व अन्य पुस्तकें यथा 'आनन्द गंगा, आनन्द सुधा व मधुगीति' पठनीय और मननशील होने के साथ संकलनीय हैं |

आपकी पुस्तकें पढने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि बघेल जी एक आध्यात्मिक कवि हैं और इनकी कविताओं में अनुभूति की गहराई के साथ- साथ भाषा का भव्यस्वरूप भी भावानुकूल ही अभिव्यक्त हुआ है | आपने जीवन के कई पक्षों पर गम्भीरता से विचार किया है और एक संवेदनशील रचनाकार व कमनीय काव्य-चित्रकार के रूप में उन विचारों को नयी वाणी प्रदान की है | आपके काव्य में भारतीय दर्शन की गहरी झलक है |

बघेल जी अनुशासित व्यक्तित्व वाले साधक कवि हैं । आपकी सर्व प्रियता, सुहृदयता, निष्कपटता, ओजस्विता व गरिमामयता आपको विशिष्ट श्रेणी का गुणोपेत मानव बनाती हैं । यही तो वे मूल्य हैं जो व्यक्ति को सितारों की भीड़ में भी चमकता सु-तारा बना देते हैं | आपके विषय में कुछ कहना या आपके व्यक्तित्व पर कलम उठाना मेरे लिए सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही होगा | बंधुवर श्रीयुत गोपाल बघेल 'मधु' जी ! मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ । आध्यात्मिक, सामाजिक एवं साहित्य के क्षेत्र में आपकी अप्रतिम सेवा सदैव स्मरणीय रहेगी |

श्याम त्रिपाठी

आपसे भावोन्मुख

हमारी जीवन धारा परम पुरुष कैसे बहाते हैं, ये वे ही जानते हैं. उन्हें जानने का प्रयास कर, हम स्वयं को कुछ समझ पाने योग्य होने लगते हैं. वे हमें सृष्टि में कब, कहाँ, कैसे, क्यों, किस परिवार, समाज, धर्म, देश, महाद्वीप, ग्रह, तारे व निहारिका पर जीवन दे हमारी जीवन यात्रा आरम्भ करावेंगे, वे ही जानते हैं। कब हमें कहीं और उपयोग करना चाहें, वे ही जानें. हम उनकी लीला, प्रयोजन, आयोजन व अभिप्राय के जाने अनजाने भागीदार हैं।

यदि हम उनकी योजना समझ कर उनके आयोजन में आनन्द लेते हुए कर्म रत रह सकें तो प्रति देश काल पात्र का सौन्दर्य हमें भाने लगता है। उनकी प्रति प्रक्रिया, प्रति प्रतिक्रिया, प्रति जीव की अठखेलियां, प्रकृति के रूप स्वरूप, प्रति देश या स्थान की खूबियां, प्रति पल की थाप, समय की ताल, व्यक्तियों व जीवों का व्यवहार, सब उनके आयोजन का प्रयोजन लगता है। उस अवस्था में भाषा, भाव, विचार, व्यवहार, अनुभव, मन, शरीर व सृष्टि का स्वरूप सब 'आनन्द अनुभूति' में मग्न हो गया प्रतीत होता है।

प्रस्तुत कविताओं का सृजन, सुख दुख की दहलीज पर, कर्म श्रंखलाओं की डोर में बंधे जीवन के हवाई अड्डे पर, स्वजनों से मिलते बिछुड़ते हृदयों के सुख दुख आनन्द की भाव छाया में, जीवन में प्रस्तुत उड़ान की उत्कण्ठा में, पृथ्वी व आकाश के मध्य आते जाते भाव– यानों के त्वरित प्रवाह के सुरों में जीवन धारा से तरङ्गित भाव लहरों में अनायास आरम्भ हुआ।

प्रभु की इस भाव सम्पदा को प्रभु जनों को समर्पित करने का जो प्रयास अनेक प्रबुद्ध कवियों, श्रोताओं, समालोचकों, परामर्श दाताओं, परिवारीय जनों, अभिमत लेखकों आदि के अनन्त सहयोग से हुआ, वह आप की सेवा में समर्पित है। मेरी अनेक सीमाओं के कारण इस प्रयास में अनेक त्रुटियाँ व कमियाँ रह गयी होंगी । आप वात्सल्य भाव से मुझे क्षमा करते हुए कृपा कर कमियों को इङ्गित करें जिससे कि इन्हें सुधार कर और भी अधिक अच्छा प्रस्तुतीकरण हो सके।

अब तक रचित ७०००+ 'मधु गीति' में से २२५ मधु गीति, अपने मूल स्वरूप, रोमन संस्कृत व अंग्रेजी स्वरूप सहित इस पुस्तक में संकलित हैं। 'आनन्द गंगा, आनन्द सुधा व मधुगीति' पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकीं हैं। शेष मधु गीति आने बाले अनेक संकलनों में यथाशीघ्र प्रकाशित होंगी। इच्छुक जन नयी कविताओं के लिये रचियता से संपर्क कर सकते हैं।

देवनागरी लिपि (हिन्दी) या अन्य प्रयुक्त लिपियां व भाषायें न जानने बालों को मूल भाषा का आनन्द देने के प्रयास में रोमन संस्कृत स्वरूप प्रकाशित किया गया है. हिन्दी न जानने बाले पाठकों के लिये अंग्रेजी स्वरूप सुविधा जनक होगा. हिन्दी भाषी भी अंग्रेजी भाव में मधु गीति पढ़ कर और अधिक आनन्द ले सकेंगे. प्रयास रहा है कि अंग्रेजी स्वरूप भी मूल रूप जैसा या और भी अधिक मधुमय लगे।

कविताओं के साथ चित्र व 'मधु छन्द' या 'मधु कप्लैट' दिये गये हैं जो बाद में रचित कविताओं या शायरियों के अँश हैं. पुस्तक में 'ब्रह्म चक्र' का चित्र परिशिष्ट में चक्रों व सृष्टि के आयामों के साथ दिया गया है।

मधु गीति की रचना की क्रम सं. व दिनाङ्क प्रति कविता के साथ दिन माह वर्ष के क्रम में अङ्कित है। प्रायः सभी मधु गीति गेय हैं और इनका विडिओ स्वरूप रचियता से सम्पर्क कर प्राप्त किया जा सकता है।

मार्ग दर्शन व सुधार के लिये आप के सुझावों व विचारों का सदैव स्वागत है । आप सभी का हृदय से नमन व साधुवाद ।

गोपाल बघेल 'मधु'
AnandaAnubhuti@gmail.com
www.GopalBaghelMadhu.com

टोरोन्टो, ओन्टारिओ, कनाडा

आनन्द अनुभूति

अध्याय 1 – आध्यात्मिक प्रबन्ध

1. विश्व की आनन्द भूमि में

* 601/15.09.09

विश्व की आनन्द भूमि में रचा था एक हिया,
सरसता सा मचलता सा प्रज्ज्वलित सा वह हिया;
विचरते बृह्माण्ड में वह मधुरता ढाला किया,
सिहरता सुषमा लिये वह जीव को भाया किया.

मनुज को यम नियम दे वह प्रीति में बाँधा किया,
प्रकृति को माधुर्य दे वह ललित में नाचा किया;
थिरकता मधु नाद में वह नीति को साधा किया,
चेतनों को चेतना दे चित्त को चेतन किया.

संस्कृति की सूक्ष्म धारा को फुरा कर चल दिया,
विकृति की प्राचीर को वह चीर कर चिर कर गया;
सूक्ष्म मानव हृदय को उसने सजाया सँजोया,
गीति रच, रस प्रीति भर, उर मीति भर, वह चल दिया.

विश्व उर आनन्द धारा में बहा ही रह गया,
क्रन्दनों के वेग को वह सहज में ही सह गया;
द्रश्य बदले, द्रुम हैं महके, बादलों को भा गया,
दृग द्रवित कर, हृद स्रवित कर, उर सभी के छा गया.

स्रोत 'मधु' माधुर्य के वह सब खिला कर चल दिया,
दीप नव सौन्दर्य के वह जग खिला कर चल दिया;
मैं अचेतन चेतना के गीत मधु गाया किया,
वह मुरलिया तान पर सबको नचाकर चल दिया.

2. सूक्ष्म प्रेम की अनुभूतियां

* 132/ 08.08.08

तुम्हारे सूक्ष्म प्रेम की अनुभूतियों को,
मैं आनन्द उमङ्ग कहूँ या आनन्द तरङ्ग कहूँ!
आनन्द अनुभूति कहूँ या अनुभूति आनन्द कहूँ,
सृष्टि प्रबन्ध के सुर कहूँ या आध्यात्मिक प्रबन्ध कहूँ!

जो भी कहूँ वे तुम्हारी ही कृपा की कला हैं,
तुम्हारे लिये बनाई पुष्प माला हैं;
उनकी सुगन्ध सौन्दर्य तुम्हारा है,
उनको धागे में पिरोने का आनन्द मेरा है.

तुम उनके सहस्रार के हर दल पर,
अपने पद कमल रखो;
उनका हृदय कमल अधरों से स्पर्ष करो,
अपने हृदय पटल पर रख उसे आनन्दित करो.

उनके रोम रोम में रम जाओ, तुम जन जन को मृदु सिहराओ;
हर तन मन में भव भर जाओ, हर 'मधु' धड़कन में गा जाओ.

3. आनन्द रस * 286/12.04.09

आनन्द रस फुहरत गगन, त्रिभुवन मगन मानव मगन;
आनन्द में थिरकित पवन, जीवन सुरभि आनन्द घन.

जन मन मगन सुरभित सुमन, नाचत गगन आनन्द में;
मधु चाँद है सुर छन्द में, थिरकित धरा मधु नाद में.
आकाश नीलाञ्जन लिये, नव मेघ थिरकित हो चले;
आनन्द सागर में मगन, ध्रुव सहित तारे बह चले.

आनन्द रस में सरसती, उल्का अलोकित हो उठी;
तारे सभी थिरकित हुए, पृथ्वी उमड़ती प्रेम में.
सुर सूर्य में बहने लगे, ग्रह मगन मन रहने लगे;
गुरु कृपा बरसाते मगन, प्रभु भक्ति में 'मधु' है मगन.

4. आनन्द घन * 328/30.05.09

आनन्द घन छाया हुआ, आकाश मन भाया हुआ;
आल्हाद इठलाया हुआ, है अरुण नभ आया हुआ.

हैं विहरती चिड़ियाँ बिखर, है मगन मन मानव प्रखर;
अरमान में उछला पवन, गारहा है गज़लें गगन.
सुर मधुर हैं कुछ बज उठे, शाश्वत हिया कुछ कह उठे;
सह राग में कुछ गा उठे, अनुराग रंजित कुछ हुए.

आनन्द मधु मोहित धरा, 'मधु' पुष्प की माधुर्यता;
सार्थक प्रकृति की पुण्यता, धारक ध्वनि की प्रणवता.
है अधर अकुलाया हुआ, है मधुर मन गाया हुआ;
है शोभिता संशोधिता, आराधना की द्योतना.

5. सुर में लहर * 330/30.5.09. (हिन्दी / ब्रज)

सुर में लहर, मन में कहर, 'मधु' चातकी चाकति मधुर;
उर ध्यान धरि, कर करम करि, बुधि बृहत करि, हिय हरष भरि.

मन पुलक भरि, प्रकृति परखि, प्राणीनता की छवि निरखि;
मधु व्योम में सुरभि लखति, शाश्वत चलन में रत रहति.
धन धान्य पूरित धरा पर, अद्भुत अनौखी छवि निरखि;
गाती रही मृदु तान पर, फुरकित अलौकिक मधु लहर.

मन उल्लसित तन प्रफुल्लित, उद्वेग रहित प्रकृति निरखि;
शालीनता की ज्योति लखि, पावन पपीहा को परखि.
उर सुरभि को धारति रहति, सुर सुरभि की शोभा लखति;
पल में पुलकि, पल में बिखरि, गावति रहति 'मधु' अधर पर.

6. प्रत्याशित प्रमुदित * 191/26.11.08

प्रत्याशित प्रमुदित जीवन धुन, अभिनव अनुभव आनन्द चुभन;
मधुमय प्राङ्गण के प्रमुदित मन, जीवन आभा के दीप मगन.
गाओ सुमधुर नाचो सुन्दर, जीवन धारा त्रिभुवन भास्वर;
मन मन्दिर में ध्याओ मोहन, आओ त्रिभुवन राधा चितवन.

राधा के रोम रोम में रस, बरसाने के कानन में बस;
गोपी मन के दधि में तुम रस, जीवन के शाश्वत गोपन रस.
गोपी के रास भरे मन में, गोपों के आल्हादित तन में;
राधा की नटखट चितवन में, श्यामा के मधुवन से मन में.

मानव मन की अरुणाई में, पक्षी की मोहक चितवन में;
माता के मधुर विलोचन में, भक्ति की मोहन थिरकन में.
'मधु' मन शोभन जीवन उपवन, मोहन मुरली की मनहर धुन;
श्यामल घन की मोहन गर्जन, प्रभु व्यापकता की प्रणवित धुन.

7. प्राङ्गण प्रचुर * 192/26.11.08

प्राङ्गण प्रचुर प्राणी प्रखर, प्रकृति प्रमुत्थित प्रभाकर;
प्राणीनता प्राचीनता प्रमुदित प्रफुल्लित मनुज स्वर.
प्राचीर चीर बढ़ो मगन, धरती खड़े छू लो गगन;
पृथ्वी तरङ्गित 'मधु' सुमन, आकाश गङ्गा मय गगन.

आनन्द की सुर तान में, सृष्टि रचित सोपान में,
सायुज्य के शुभ चलन में, प्रति विम्ब के प्रतिविम्ब में;
आभास है, मृदु आश है, मन में भरा विश्वास है,
निश्चय भरा निःश्वास है, निश्छल हृदय आकाश है.

तल्लीनता प्रतिबद्धता, प्राणीनता संशोधिता,
शोभित हृदय की सरलता, सिंचित हृदय की प्रखरता;
चंचल हृदय की विकलता, चाणक्य मन की चतुरता,
देदीप्य मन की धवलता, आनन्द रस की नवलता.

8. पुलकित प्रफुल्लित * 193/26.11.08

पुलकित प्रफुल्लित सुभग तन, आनन्द लसित प्रभा रतन;
जीवन प्रमोदित लसित मन, सुरभित सुमन आनन्द घन.

मम मन प्रणव आनन्द मय, जीवन सुरभि शुभ छन्द मय;
प्रारब्ध प्रेरित प्राण मय, संस्कार सेवित 'मधु' मय.
मलयज पवन सारङ्ग सुर, सारङ्ग अङ्ग सुधा प्रचुर;
अनुभूति आनन्दम मधुर, तत्पर तरल तन तरुण चिर.

आनन्द शोभित स्वयं तुम, आनन्द राशि धरा वरम;
सोहं वराभय स्वयं तुम, रस सघन हृद शिव सरिस तुम.
तुम धर्म प्रेरित कर्म रत, तुम गरल पान किये फिरत;
आधार भूत धरा धरत, सोहं बने सृष्टि धरत.

9. सोहन सुभग सुन्दर सुमन * 195/26.11.08

सोहन सुभग सुन्दर सुमन, सुमधुर सरल चैतन्य मन;
आनन्द घन मन्द्रित नयन, चेतन चुभन जीवन तरन.

मन उल्लसित, तन प्रफुल्लित, धाये धरा पुलकित पवन;
आनन्द में लिपटा गगन, लेता स्वपन मूँदे नयन.
आनन्द थिरकित बृह्म मन, शंका तिरोहित बृहत मन;
आशा तरङ्गित मनुज मन, आनन्द उत्प्रेरित सुजन.

शुभ कर्म रत योगी विकल, कल कल करत धारा विकल;
विश्वास अर्पित मन अटल, संताप रहित सुहास पल.
गावत जगत, नाचत निखिल, खिलती सुहानी धूप खिल;
झिलमिलाती चाँदनी बाजे विगुल,
नाचती 'मधु' यामिनी होकर मृदुल.

10. कितनी सदियाँ * 308/20.05.09

कितनी सदियाँ बीत चली हैं, तुम आए ना मैं पहुँचा हूँ;
तारे कितने चमक चले हैं; धरती कितनीं धर धायीं हैं.

कितने नभ मुझको देखे हैं, कितने जल मुझको सींचे हैं;
चिड़ियाँ कितनी चहक गयीं हैं, गर्जन सिंह किये कितने हैं.
मानवता कितनी बिखरी है, दानवता कितनी निखरी है;
कितने पाषाणों की काया, प्रतिसंचर में पुष्प बनी है.

मेरे उर में तुम ना आये, सुर ना पाये, सुधि ना पायी;
प्राणों की इस ऊह पोह में, ऋतु ना भायी, गति ना पायी.
प्रेम पयोनिधि विकल हुए हैं, सुर सुरभित हो बिखर रहे हैं;
काया की माया में मोहन, 'मधु' मन राधा निरख रहे हैं.

11. सरसता सा रहा * 312/20.05.09

सरसता सा रहा मैं सजन, बरसता सा रहा 'मधु' गगन;
तरसता सा रहा ये चमन, चाहता सा रहा ये सुमन.

जीव जाग्रत नहीं हो रहा, तन्द्रा उर से निकल ना रही;
भीति उर में है छायी हुयी, मीति मन में नहीं आ रही.
गा भी दो सुर नया सा सजन, रच भी दो कुछ नया सा भुवन;
रङ्ग दो ये रंगीला सा मन, प्रीति पृथ्वी पै जाये बिखर.

नाचता सा रहा उम्र भर, काँपता सा रहा स्वप्न भर;
दिन निकलता रहा बेखबर, रात रोती रही बेअसर.
सुरभि भरदो सुमन में सजन, साँझ गा जाये मीठी गज़ल;
पवन नाचे दे कर तल की ध्वनि, प्रात पाजाये प्राणों में धुन.

12. धरा धूलि की भूषित मणि * 163/23.09.08

तुम धरा धूलि की भूषित मणि, आभूषित जीवन की चिरध्वनि;
सागर तल की 'मधु' हीर कणी, जीवन की नन्दित वैतरिणी.

नभ उर की एक किरण सहमी, वायु से विचरित बूँद नयी;
आनन्दित गङ्गा की ठिठुरी, सिमटी सिसकी शिष्टित लहरी.
पुष्पित पुलकित सुरभित वृष्टित, आनन्दित गायित सुर प्रमुदित;
रागों की एक लहर थिरकित, जीवन का एक स्वपन सुरभित.

मैं ना जानूँ, मैं ना मानूँ, जीवन की धुन सुनना जानूँ;
जीवन की राग भरी बातें, कहता सुनता गाता जाऊँ.
तुम आजाओ, 'मधु' गाजाओ, जीवन के स्रोत बहा जाओ;
आनन्द धरा पर दे जाओ, आनन्द सुधा लेते जाओ.

13. मधु तुम आजाओ तो! * 28/03.04.08

'मधु' तुम आजाओ तो, रंग भरें जीवन में.
राग भरें, छंद भरें, गीत भरें त्रिभुवन में;
रूप भरें, रस भरदें, गँध भरें हर मन में.

तृषा क्षुधा मिट जावे, जगमग जग हो जावे;
स्वस्थित्य तन हो जावें, स्व–स्थित मन हो जावें.
कर्म करें ध्यान धरें, भक्ति भरें जीवन में;
आशा अभिलाशा की पूर्ति करें जग जन में.

भाषा भावों से भरें, हर जीवन हृद की कह पाये;
हर मन कुछ सुन पाये, हर हृद हद सह पाये.
कुँठा को काट सकें, कटुता को बाँट सकें;
कम्पित मन प्राण न हों, झँकृत आनन्दित हों.
सृष्टा का प्रेम पगे, भूमा के कण कण में.

हर्षित पृथ्वी का हर कण हो, प्रति पुष्प प्रफुल्लित हो जावे;
विहँसे विचरें जग में जन्तु, हर तन्तु तरङ्गित हो जावे.
तुम आजाओ, अब आजाओ, भव भर जाओ तुम भव भर में;
विचरो विहरो भूमा मन में, अणु के मन में, जग जीवन में.

14. पुरुष के पुरुषार्थ * 29/04.04.08

पुरुष के पुरुषार्थ तुम, मैं प्रकृति की कृतबद्धता;
मेघ मन्द्रित मधुर तुम, मैं मयूरी की मधुरता.

चंचल चपल मैं चतुरता, तुम श्याम सुन्दर सघनता;
मैं कर्म प्रेरित रत विरत, तुम धर्म प्रेरित मन विरत.

तुम प्रकृति को प्राकृत करत, मैं प्रकृति की गति में प्रवृत;
प्रकृति मुझे पर–कृति लगे, स्वकृति सरिस तुम में पगे.

चिन्तित सभय विचलित व्यथित, मैं विचरती इस विश्व में;
विषपान कर तुम विकट विहँसे, विहरते बृह्माण्ड में.

तुम धरा की धूल धरते विचरते, मैं धरा के फूल 'मधु' चुनते बिखरती.
फूल मेरे धूल अपनी में मिलालो, प्रकृति को निज अँक ले प्रभु तुम सुला लो.

15. 'मधु' गान तुम गाओ * 53/08.05.08

'मधु' गान तुम गाओ सुहृद, मन को हृदय में ले चलो;
तुम राग एक गाओ गहन, आनन्द में अब ले चलो.

मन लिये आकाश में, तुम दूर बह कर चल पड़ो;
मेरे हृदय के राग को, आकाश गङ्गा बनादो.
तुम चलो, आनन्द की लय में बहो;
ले चलो, प्रिय के निकट, तुम ले चलो.

विश्व सरिता में, मुझे तुम बहालो; मधुर मधुकर कर नचालो.
सुहृद मेरे हृदय को, तुम देख लो, मधुर मुरली तान पर, तुम नचालो.
गीत तुम गालो, मुझे माध्यम बनालो; सुरसरी बन मधुरता में डुबालो.
मेरे मन को तरङ्गित कर ले चलो; गीत में भर कर मुझे तुम ले चलो.

16. मयूरी को मेघ में * 30/04.04.08

मयूरी को मेघ में प्रभु तुम नचालो;
प्रकृति को थिरकित करो,
नव विश्व ढालो.

मधुर भाषाएं बहें हर कण्ठ में;
कण्ठ आनन्दित रहें वैकुण्ठ में.
सरस सुरभित प्रफुल्लित हर पुष्प हो;
चित्त निर्मल, मन अभय, स्वच्छन्द हो.
सुधा वसुधा पर बहा दो.

नाच जाएं मन, मगन मानव रहे,
सृष्टि की शोभा, अक्षुण्ण अनुपम रहे;
थिरक जाएं जीव, जीवन की छटा में,
अमिय जाये वरस, सावन की घटा में.
शिव जटा से सुरसरी को फिर बहा दो.

प्रदूषण मन का हरो, तन का हरो,
विभूषित जल को करो, वन को करो;
वायु को विचरित करो, गद् गद् गगन में,
मुक्त धाराएं बहें, जड़ जीव जग में.
कोकिला के राग से किसलय खिलादो.

भाव जड़ता को जगत से हटालो,
मज़हवों को हवाओं से बचालो;
विश्व को व्यापक बना व्यवहार करलो,
संपदा समुचित 'मधु' को दिलादो.
विश्व सरिता बन सभी को प्रभु बहालो.

17. विश्व विश्वास से खिला रहता * 586/02.11.09

विश्व विश्वास से खिला रहता, खुला खिला हिया 'वही' देता;
विविधता विश्व में भरे रहता, स्व स्वयं बिखर विश्व बन जाता.

विश्व की विचरती विधाओं में, प्राण की खुल रही गुफाओं में;
उफनती मचलती घटाओं में, सिहरती सौम्य सी अदाओं में.
रचियता विश्व का बसा रहता, नियंत्रण सभी कुछ वही करता:
चाँद तारों को घुमाता रहता, अणु जीवत को वही फुर करता.

चेतना चिर चहकते जीवन में, चरैवति सिखाती सहज पन में;
प्रकृति के पनपते प्रयोगों में, विकृति के झटकते झरोखों में.
विश्व प्रति क्षण क्षरित उदित होता, विलक्षण गति लिये त्वरित होता;
'मधु' दृष्टा बने सदा रहता, विश्व त्राता सदा हृदय रखता.

18. कपोतों पर कृपा बरस जाती * 575/22.10.09

कपोतों पर कृपा बरस जाती, चाँदनी में घटा है खिल जाती;
त्रसित तन पर बहार आजाती, रसित मन भक्ति लहर छाजाती.

कल्पना से घिरे कपोलों पर, करूण काया खिले नवेलों पर;
कृष्ण की काञ्चनी कमल काया, कष्ट कर दूर तरती मन माया.
काननों की कठोर कटु गाथा, कह नहीं पाता काग कष्ट कथा;
हिरणि के सहमते से नयनों में, भरी कितनी कथा है काजल में.

क्रन्दनों का कसाब कड़वा है, चन्दनों का रखाब तीखा है;
बन्धनों का बहाव सिकुड़ा है, प्रभु स्पन्दनों से तरना है.
स्वाति की बूँद कभी गिर जाती, सीप मोती बने है खिल जाती;
कपोलों पर बहार आजाती, 'मधु' कानन में कलियाँ खिल जातीं.

19. अनन्त की अँगड़ाई * 21/28.03.08

तुम हो अनन्त की अँगड़ाई;
मैं हूँ 'मधु' जग की गहराई.

देश काल पात्र, तुम्हारे आयाम हैं;
सत रज तम, तुम्हारी प्रकृति के निःश्वास हैं.
महत अहम् चित्त, तुम्हारी प्रबन्ध शैली की लहरें हैं;
पञ्च तत्त्व तुम्हारी सम्पदा हैं,
प्रकृति जनित जीव, तुम्हारी प्रजा हैं.

जीव को, देश काल पात्रों से विलग कर,
विलय लेते हो, स्वयं में जब कभी;
सृष्टि कर देते हो, जीव के शून्य में, स्वयं की;
जगत सज उठता है, पञ्च तत्त्व की चमक से.

सृजन करते हो, अपनी हर विधा में, हर अदा में;
विचित्र जीव रच लेते हो, पञ्च तत्त्व की हर परत में.
कर लेते हो विरचित वन जन्तु जन सुजन स्वयं में;
सब विचरित, विकासशील रहते हैं, जन विजन में.

तुम सञ्चर रच, प्रतिसञ्चर पैदा करते हो,
सुजन को स्वयम् में समेट, सृजन करा देते हो.
सृजन के हर पल, हर पात्र व देश में सृजित करते हो;
नव सृष्टि, नव भाव, नव राग, नव लहर, नयी गहराई.

***

19 H. मधु छन्द * 550 D/08.10.09

स्वयं प्रभु हृदय आ ही जावेंगे, मन ही मन भाव गुदगुदायेंगे;
उर में व्यापक विहाग फूटेंगे, सुर में स्वायत्त राग सुलगेंगे.

20. प्रभु तुम्हारे प्रकाश में * 42/22.04.08

प्रभु तुम्हारे प्रकाश में, कितने उजाले आये;
तुम्हारी नीरव निशा में, कितने तारे जगमगाये.
कौने में बैठा मेरा मन, देख नहीं पाया,
समझ नहीं पाया.

कितनी चिंगारीं, बुझते बुझते जलीं;
कितनी आत्माएं, चिताओं के ढेर से उठीं.
कितने पतंगे प्रकाश के प्रेम में तरे;
कितने जीव दूसरों को जीवित रखने में उठे.

अपनी प्रकृति में, तुम कितने जीव रचते हो;
उनकी भूख प्यास का ध्यान रखते हो.
एक एक कोशिका को रक्त रस देते हो;
फिर कभी, एक का जीवन, दूसरे को ले लेने देते हो!

कभी कभी मैं सोचता हूँ! तुम अपना यह खेल,
किसी और तरह, क्यों नहीं कर लेते!
क्यों इतनी अनुपम निरीह आत्माओं को नचाते हो;
क्यों हर प्राण को बार बार, मिटने सिमटने का कष्ट देते हो.

शायद तुम हर आत्मा की, उसकी हर जीवन लीला की,
अनुभुति का प्राण रस परखते हो;
उस प्राण रस को सृष्टि में फिर बो देते हो.

शरीर यंत्र में, मन मन्त्र का 'मधु' बीज बो,
आत्म तन्त्र की फसल उगाते हो.
फिर कभी, दग्ध बीज हो जाने पर,
उर में रख लेते हो.

21. अनन्त का राही * 11/27.03.08

प्रभु मैं अनन्त का राही हूँ,
तुम मेरे साक्षी हो, मेरे हम सफ़र हो.

कितनी व्यथायें विहरती हैं विश्व में,
बिखरते हैं पुष्प कितने तुम्हारे शिखर में.
कितनी कलियों को तुम करुणा देते हो,
कितने काँटों को तुम हटवा देते हो.

तुम चलते रहते हो, चलाते रहते हो;
मुस्कराते हो, हँसाते हो, प्रेरणा देते हो.
कभी रुला देते हो, कभी सुला लेते हो;
प्यार में कँपा देते हो, क्रोध में हँसा लेते हो.

तुम्हारी लीला कभी समझ आती है,
कभी समझी हुई होकर भी
बेग़ानी हो जाती है.
कभी तुम चिर दयालु लगते हो,
कभी दया बिना विरही बेराही लगते हो.

तुम जीवों को कभी स्वच्छंद विचरण करने देते हो;
कभी उनकी एक एक इन्द्रिय को जकड़ देते हो,
मन प्राण को भटकने देते हो.

कभी उनका सब कुछ समेट अपने हृदय में रख,
उनसे भिक्षा मगवाकर प्रसाद माग लेते हो;
तो कभी उनके गुरु चक्र पर बैठ,
'मधु' कृपा बिखेर देते हो,
मालिक बना देते हो.

22. निर्गुण सगुण सत्ता * 56/13.05.08

निर्गुण सत्ता सगुण हो सृष्टि रचती है,
प्रकृति उसकी प्रबंध शक्ति बन प्रकट होती है;
सृष्टि में त्रिगुणात्मक संतुलन होता है,
सत रज तम, गुणों में, संतुलन साम्य रहता है.

सत रज तम का संतुलन असाम्य होने पर,
प्रतिसंचर में प्रबंध सुधारने, प्रकृति क्रियाशील होती है;
सगुण सत्ता, महत भाव धारण कर लेती है,
सृष्ट संस्था और विकसित होने पर, महत अहम् प्रकट करता है.

अवश्यकता होने पर, अहम चित्त का अविर्भाव करता है,
सृष्टि को सगुण, महत, अहम, चित्त चलाते हैं;
प्रकृति प्रबंध कला में परिमार्जित होती जाती है,
सगुण द्वैत और फिर अनन्त होता जाता है.

विकसित सृष्टि में, सगुण की प्रकृति का नियन्त्रण बढ़ता है;
सगुण स्वयं भी प्रबंध के अनन्त पद विभागों में प्रकट होता है.
सगुण की सृष्टि का विस्तार, प्रतिसंचर को 'मधु' गति देता है;
उसकी प्रकृति की प्रबंध शैली, सृष्टि को प्रगति देती है.

***

22 H. मधु छन्द * 551 CE/08.10.09

प्रलय लय विचरती सदा जिसमें, ललित ताण्डव सुहाते हैं जिसमें;
ऋद्धियां सिद्धियां बसें उर में, सृष्टि संवित सदा रहे जिसमें.

सृष्टि की सुहानी विधाएं हैं, भक्त भगवान की ऋचाएं हैं;
दृष्टि की अदद सी अदाएं हैं, बहारें राह की कृपाएं हैं.

23. अनन्त रचयिता * 14/27.03.08

तुम अनन्त रचयिता हो देश काल पात्र के;
चित्त के, महत के, त्रिगुणात्मक प्रकृति के, सगुण के.

पञ्चभूत भूषित है तुम्हारी ही पृथ्वी
जल अग्नि वायु एवं आकाश में
तुम्हारा ही चित्त व्याकुल हो पृथ्वी के क्लेश से;
रच लेता है वन जन्तु जन,
सुजन योगी अपनी ही सृष्टि में.

योगी योग करता है, तुम्हारे ही सगुण से,
तुम्हारा सगुण योग करता है सृष्टि के योगरस से;
आल्हादित स्पन्दित हो मिल जाता है निर्गुण से.
निर्गुण फिर कभी भी सगुण हो उठता है;
हो उठती है नव सृष्टि नव प्रकृति की उसी से.

सृष्टि विहँसित, रसित हो, रचती है नव सृष्टि,
सृष्टि नव सृष्टि, अन्तर्सृष्टि, वाह्यसृष्टि,
रचती है हमारी सृष्टि पात्रों को देश काल में;
देश काल पात्र नाच उठते हैं तुम्हारी इस क्रीड़ा से.
विस्मृत प्रकृति विहँस उठती है,
त्रिगुण गुणायमन हो उठते हैं.

निर्गुण की गहराई गुण रच लेती है;
हर देश काल में प्रति पात्र से प्रयास करा लेती है.
गुण विचरित हो, विकसित हो;
निर्गुण के गुण को समझ लेते हैं.
देश काल पात्र, सृष्टि को आनन्द से भर देते हैं.
अपनी इस लीला का आनन्द रस तुम
'मधु' मन में बैठे ले लेते हो.

24. सगुण * 57/13.05.08

सगुण का महत अहम बना, अहम चित्त बना,
हर चित्त ने अपना आकाश रचा;
आकाश में वायु विचरी, वायु अग्नि बनी, अग्नि जल बनी,
जल पृथ्वी बना, पञ्च तत्व मय जगत बना.

पृथ्वी के कण जब अतिशय संघर्ष रत हुए,
तब उसने, किसी पृथ्वी कण के अन्दर, चित्त को जगाया;
वनस्पति प्रकट हुई, विकसित हुई, संघर्ष रत हुई,
वनस्पति के संघर्ष से सृजन हुआ जन्तु का.

जन्तु विकसित, संघर्ष रत हो, मानव बन उठा,
मानव संघर्ष करता करता, बुद्धि जीवी बना;
बुद्धि जीवी मानव संघर्ष से आध्यात्मिक बना,
सगुण, निर्गुण, सृष्टि चक्र व प्रकृति को जाना.

आध्यात्मिक मानव अन्ततः मिलाया मन को सगुण में,
समाधिष्ठ हो समर्पित हुआ, सगुण निर्गुण में;
सगुण ने अपने इस नये समर्पित मानव को,
सगुणित किया सृष्टि के संचालन में.

फिर रची सृष्टि सगुण, महत, अहम चित्त की,
पञ्च तत्त्व, वन, जन्तु, जन, सुजन की;
सृष्टि के चक्र पर चक्र चले, सत्ताएं सगुण निर्गुण हुईं,
'मधु' आनन्द धाराएं अनेक बहीं, सम्भूति कुछेक हुईं.

***

24 H. मधु छन्द * 476 E/07.08.09

सब जीव तुमरे यन्त्र हैं, सब प्राण तुमरे मन्त्र हैं;
सब आत्माएं तन्त्र हैं, 'मधु' मर्म सब तुम में बसें.